/11/21, 2:04 AM

(6) WhatsApp

46 5

Neetu Mam Hindi Head

09/10/2021 at 8:43 am

हिंदी अनुशीलन

ISSN : 2249-930X

पीयर रिव्यूड व यू.जी.सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

हिंदी अनुशीलन

गाँधी विशेषाँक

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

वर्ष - 62

अप्रैल-जून तथा जुलाई-सितम्बर 2020

अंक 2-3

s://web.whatsapp.com

1/1

49-47

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

वर्ष 62 अप्रैल-जून तथा जुलाई-सितम्बर 2020 अंक 2-3 ISSN : 2249-930X

परामर्शदाता
प्रो. कमल किशोर गोयनका
प्रो. सुरेन्द्र दुबे
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक
प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

संपादन सहयोग
डॉ. निर्मला अग्रवाल
प्रो. मीरा दीक्षित

भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ. निर्मला अग्रवाल, प्रबंधमंत्री, भारतीय हिंदी परिषद्
हिंदी-विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Website : www.bhartiyahindiparishad.com
Email : hindianusheelan@gmail.com

मूल्य : ₹ 100.00

अक्षर संयोजन : राजेश शर्मा, मो. : 9450252918
मुद्रक : प्रभा कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स, विश्वविद्यालय मार्ग, प्रयागराज

44. गाँधीजी के नारी संबंधी विचार 300

डॉ. आशीष सिसोदिया

45. उम्मीद का दामन : गाँधी 305

(हिंदी स्वराज के विशेष संदर्भ में)

डॉ. नवीन नन्दवाना

45. प्रेमचंद की कहानियों में प्रतिबिम्बित गाँधी दर्शन 314

डॉ. नीतू परिहार

46. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार 320

डॉ. सुनीता सिंह

प्रेमचंद की कहानियों में प्रतिबिम्बित गाँधी दर्शन

डॉ. नीतू परिहार

"कुछ कृश लंबी और इस्पाती स्नायुजाल से किसी उज्ज्वल, श्यामवर्ण देह को देखकर लगता था मानो किसी साँचे में ढली लौह प्रतिमा को ज्वाला से धोकर स्वच्छ कर दिया हो।"[1] महादेवी जब गाँधी जो को अपने संस्मरण में लिखती हैं तो गांधी जी की छवि हमारे मानस में हूबहू बन जाती है। असाधारण व्यक्तित्व के धनी महात्मा गाँधी को उनकी आकृति भी असाधारण बनाती है। उन्होंने क्षीण कटि और कृश उदर के ऊपर चौडे वक्ष में अथाह करुणा का समुद्र बाँधकर रखा था। उनमें वह शक्ति थी कि वह मनुष्य की क्रूरता के हर ह्रप को अपनी गहराई में डूबा देते थे। उनका व्यक्तित्व अद्‌भुत और चुंबकीय था। कोई उन्हें जादूगर कहता तो कोई अर्धनग्न फकीर, कोई उन्हें साधक कहता। लोग उनके पास ऐसे ही खींचे चले आते जैसे पतंग दीप्ति के पास।

गाँधी जी ने अपने जीवन में सत्य, अहिंसा और प्रेम के त्रिगुणात्मक तत्व को ही अपनाया। यद्यपि अहिंसा का सिद्धांत प्राचीन काल से चला आ रहा है जिसको विश्व के पटल पर ईसा मसीह, महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध आदि ने प्रतिपादित किया। गाँधीजी ने भी अहिंसा के मार्ग को अपनाया। उनका मानना था कि इस मार्ग में सेवा और त्याग प्रमुख है।

गाँधीजी जिन उद्देश्यों को लेकर चले, प्रेमचंद भी अपने लेखन में उन्हीं उद्देश्यों को लिख रहे थे। महात्मा गाँधी भारतीय राजनीति और स्वाधीनता आंदोलन के सबसे बड़े व्यक्तित्व हैं। उन्होंने सत्य एवं अहिंसा को ही व्यावहारिक जीवन से जोड़ दिया। यह उन्होंने इतने प्रभावशाली ढंग से किया कि समाज का कोई भी क्षेत्र से अछूता न रह सका। फिर राजनीतिक क्षेत्र हो या सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र हो या आर्थिक शिक्षा का क्षेत्र हो या कला का। अपनी सीमाओं की ईमानदारीपूर्ण स्वीकृति और सत्य, अहिंसा के आजीवन आग्रह ने ही उन्हें गाँधी बनाया।

प्रेमचंद स्वाधीनता आंदोलन के समय के सबसे बड़े कथाकार थे। साथ ही वे एक जागह्रक विचारक भी थे। उनका रचना-संसार निस्संदेह स्वाधीनता आंदोलन से ऊर्जा प्राप्त करता रहा। तो यह भी स्वाभाविक ही है कि उस दौर के सबसे बडे विचारक और राजनेता महात्मा गाँधी का प्रभाव प्रेमचंद की रचना दृष्टि पर पडे। प्रेमचंद के उपन्यास और कहानियों पर गाँधी का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। रंगभूमि और कर्मभूमि में गाँधीजी के मूल सिद्धांतों-औद्योगीकरण का विरोध, सत्याग्रह, ह्रदय परिवर्तन, धार्मिक दृष्टिकोण, अछूतोद्धार आदि को देखा जा सकता है।

प्रेमचंद बहुत कोमल स्वभाव के व्यक्ति थे। एक सीधा-सादा जीवन उन्होंने जिया। महादेवी जी उनके व्यक्तित्व को कुछ इस तरह याद करती हैं- "साधारण धोती-कुर्ते में आवेष्टित कृश शरीर, मझोला कद, उसी के अनुरुप कोमल हाथ-पैर, सिर पर रुखे खडे हुए-से बाल, गोलाई लिए चौड़ा मुख, प्रशस्त ललाट, घनी भौंहें, कुछ तिरछी खींची हुई-सी आँखें, जिनकी असाधारणता में एक अनिर्वचनीय आत्मीयता छलकी पड़ती थी। दोनों ओंठों पर आवरण-सा डाले हुए घनी मूछें, जो मानो उनके अट्टहास को रोकने के प्रयत्न में हिलडुल कर अंत में असफलता में ठहर जाती थीं।"[2]

प्रेमचंद ने साहित्य के भंडार को खूब भरा। 300 से अधिक कहानियाँ, कई उपन्यास, निबंध आदि लिखे, किंतु वे सदा जमीन से जुडे रहे। उन्होंने कभी अपने आप को बड़ा लेखक नहीं माना। उनसे जब कोई उनके जीवन के बारे में पूछता तो वे कहते कि मेरे जीवन में ऐसा क्या है जो बताऊ। मैं बिल्कुल सीधा-साधा व्यक्ति हूँ। जब उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखने की सोची तो सबसे पहले लिखा- "मेरा जीवन सपाट ,समतल मैदान है, जिसमें कहीं-कहीं गड्ढे तो हैं, पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खंडहरों का स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाडों की सैर के शौकीन हैं उन्हें तो यहाँ निराशा ही होगी।"[3]

प्रेमचंद अच्छे कहानीकार हैं। वे यह मानते हैं कि कहानी के लिए कथाकार को जीवन के कोलाहल भरे मेले में धंस कर अपने आप को भीड़ का अंग बनाना होगा तभी वह कहानी लिख सकता है। वे अपनी कहानी के लिए विषय बिल्कुल अपने आसपास से चुनते। उन्होंने अमर कथा- साहित्य की रचना के साथ-साथ युग- जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श किया। युग- चेतना को प्रबुद्ध करने के लिए प्रेमचंद ने 'जागरण' पत्रिका निकाली। भारतीय भाषाओं के साहित्य को एक-दूसरे से परिचित कराने के लिए 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन किया। स्वतंत्रता संग्राम में योगदान किया और प्रगतिशील आंदोलन आरंभ किया। वे गाँधीजी से बहुत प्रभावित थे। इसका प्रमाण उनके उपन्यासों और कहानियों में देखा जा सकता है। इस आलेख में कुछ कहानियों का कथन किया जा रहा है जो गाँधी जी से प्रभावित हैं।

प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'नमक का दरोगा' 10 दिसंबर, 1913 में प्रकाशित हुई। यह कहानी उस समस्या को बताती है जिसमें ईश्वर प्रदत्त वस्तु को काम में लेने से मना कर उस पर टैक्स लगाया है। इस कहानी में 'नमक' पर टैक्स लगाए जाने तथा नमक की काल बाजारी का कथन किया गया है। कहनी का मुख्य पात्र मुंशी वंशीधर दरोगा के पद पर नियुक्त होता है। नौकरी पर जाने से पहले वंशीधर को उनके पिता ने नौकरी कैसे करनी है इसकी बारीकियाँ समझाई थीं-"नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मजार है। निगाह चढावे और चादर पर रखनी चाहिए। मासिक वेतन तो पूर्णमासी क चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।"[4]

पिता की इन सभी बातों को वंशीधर सुनता है। नौकरी मिल जाने पर वह पूरी लगन और मेहनत से अपना काम करता है। उसने अपनी ईमानदारी और कार्यकुशलता से सभी अफसरों को प्रभावित कर लिया। एक दिन रात को यमुना नदी के किनारे गाडियों में बोरों में 'नमक' अवैध ह्रप से ले जाया जा रहा था। पूछने पर पता चला, यह काम पंडित अलोपीदीन के लिए किया जा रहा है। मुंशी वंशीधर को आश्चर्य हुआ कि इलाके के सबसे प्रतिष्ठत जमींदार को यह काम करने की क्या आवश्यकता पड़ गई। मुंशी वंशीधर ने गाडियों को वही रोक लिया।

पडित अलोपीदीन जो लक्ष्मी पर अखंड विश्वास करते हैं, बंशीधर को रिश्वत देकर नियम के विरुद्ध काम करवाना चाहते हैं, लेकिन वंशीधर पैसों के लालच में न पड़ उन्हें गिरफ्तार कर लेता है। इंस्पेक्टर के चरित्र की दृढ़ता गांधीवाद का प्रभाव है, मुंशी वंशीधर के चरित्र से अलोपीदीन का हृदय परिवर्तन गाँधीवाद के प्रभाव को पुष्ट करता है। जैसे चरित्र की शिथिलता संक्रामक है, वैसे ही चरित्र की दृढ़ता भी। मुंशी वंशीधर के अडिग चरित्र और धैर्य ने अलोपीदीन को प्रभावित किया और अलोपीदीन का हृदय भी चरित्र की दृढ़ता के समक्ष विनम्र हो गया।

प्रेमचंद यह संदेश देना चाहते हैं कि यदि आपका हृदय दृढ है, सत्मार्ग पर चलता है तो आप दूसरों को भी प्रभावित कर सकते हैं, उनका हृदय स्वतः बदल जाता है। देखने की बात यह है कि मुंशी वंशीधर अपने पिता की व्यावहारिक सिखावन की भी अपेक्षा कर देते हैं। यह उनकी कर्तव्यनिष्ठा का प्रमाण है।

प्रेमचंद की 'जुलूस' कहानी मासिक पत्रिका हंस में 1930 में प्रकाशित हुई। इस कहानी में प्रेमचंद ने आजादी से पूर्व की स्थितियों का चित्रण किया है। उन्होंने स्वतंत्रता के लिए प्रयत्नशील स्वयंसेवकों के जुलूस, भारत माता की आजादी के नारे, अहिंसा और शांति के नारे लगाते लोगों का सजीव चित्रण किया। कहानी में एक बूढे नेता इब्राहिम अली स्वराज्य के लिए कुछ युवकों, बूढ़ों और कुछ बालकों के साथ जुलूस निकालते हैं जिसे दारोगा बीरबल अपने सिपाहियों के साथ रोकता है। वह जुलूस आगे नहीं बढ़ने देता। वह घोडे की टापों से इब्राहिम को कुचलता है, बैंटन से मारता है, लेकिन इब्राहिम फिर भी मार्ग से पीछे नहीं हटता। वह सत्याग्रही था, उसके पास नैतिकता का बल था।

बीरबल से पिटने पर भी, इब्राहिम और उसके साथी शांत खडे थे। घायल हो जाने और लाठियों से पिटने पर भी जुलूस ने हिंसा का मार्ग ग्रहण नहीं किया। यह उनकी सहनशीलता और अहिंसा के प्रति विश्वास था जो कि गाँधी जी के पूर्व इस देश में दिखलाई नहीं पड़ता। इस प्रकार का सत्याग्रह गाँधी जी की देन थी और प्रेमचंद इस भावना से इतने प्रभावित हैं कि उन्होंने एकाधिक कहानियों में इसे बड़ी निष्ठा से उजागर किया है।

जुलूस का पक्ष लेने असंख्य लोगों का हुजूम लाठियाँ और हथियार लेकर आगे बढ़ने लगा तो स्वयंसेवक सिद्धांत, धर्म और आदर्श पर चलते हुए वहाँ से पीछे हट गए। बीरबल को जब पता चला कि इब्राहिम उनकी मार से मर गया है और सारे लोग 'वंदेमातरम' का नारा लगाते हुए उन्हें दफनाने जा रहे हैं, तो लज्जित हो जाता है। उसे लगता है कि उससे तुच्छ स्वार्थ की प्राप्ति के लिए बहुत बडा पाप हो गया है। वह इब्राहिम की पत्नी से क्षमा माँगने जाता है, यह भी गाँधी दर्शन की अभिव्यक्ति है।

गाँधीजी मनुष्य की सद्वृत्तियों में अटूट विश्वास रखते थे। उनके अनुसार पापी के पाप कर्म से घृणा की जा सकती है, पाप कर्म करने वाले व्यक्ति से नहीं। वे मानते हैं कि हृदय परिवर्तन, सत्य, अहिंसा, न्याय और प्रेम के द्वारा ही संभव है। गांधीजी के इन्हीं विचारों का प्रतिपादन प्रेमचंद ने 'जुलूस' कहानी में किया है। बीरबल अपनी पत्नी मिठठ्न बाई की फटकार, स्वयं अपनी भर्त्सना और राष्ट्रीय भावना के कारण एकदम परिवर्तित हो जाता है। वह इब्राहिम अली की विधवा से क्षमा याचना करता है। प्रायश्चित के आँसू उसके सारे पापाचार धो देते हैं। बीरबल अपनी दुर्बलताओं से जूझता है, परंतु अंततः सद्वृत्ति उसकी दुर्बलता पर विजय पाती है।

गाँधी चिंतन के अनुसार विश्व का मूल स्रोत सत्य है। यह संसार के कण-कण में विभिन्न ह्रपों और आकार-प्रकार में व्याप्त है। सत्य सर्वोपरि है, इसकी रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग भी करना पडे तो हिचकिचाना नहीं चाहिए। सत्य की इस ब्रह्म स्वह्रप की अभिव्यक्ति प्रेमचंद की कई कहानियों में हुई है। उनकी कहानियों के कई पात्र ऐसे हैं, जो सत्य के मर्म को पहचानते हैं और सत्याचरण को ही अपना धर्म मानते हैं।

प्रेमचंद की कहानी 'पंच परमेश्वर' में गाँधी के सत्य-तत्व की महत्ता को देखा जा सकता है। जुम्मन शेख और अलगू चौधरी घनिष्ठ मित्र कहानी के केंद्रीय पात्र हैं। दोनों साथ में खेती करते हैं, कुछ लेन-देन हो तो भी साझा करते हैं। दोनों का एक-दूसरे पर अटूट विश्वास है। एक बार जब जुम्मन शेख की

खाला (मौसी) ने शिकायत की कि जुम्मन की पत्नी उसे अच्छा खाना नहीं देती है। इसलिए उसे उसके हिस्से की जमीन जो वे जुम्मन के नाम कर चुकी हैं, उसके बदले कुछ रुपया दे दे। वह अपना खाना अलग बना कर खा लेगी। जुम्मन ने इस बात का विरोध किया कि रुपये पेड़ पर थोड़ी लगते हैं जो दे दूँ। खाला इस बात पर बिगड़ी और पंचायत करने की बात कही। खाला ने पूरे गाँव, बल्कि आस-पास के गाँवों को भी पंचायत में आने का तथा न्याय करवाने में मदद की गुहार की। वह अलगू के पास भी गई कि वह पंचायत में जरूर आए। अलगू अपनी मित्रता का हवाला देकर बोला कि पंचायत में आ जाऊंगा, मगर पंचायत में मुँह न खोलूंगा।

''खाला - क्यों बेटा

अलगू - जुम्मन मेरा पुरान मित्र है। उस से बिगाड़ नहीं कर सकता।

खाला - बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?''[5]

यह वाक्य सुन अलगू कोई उत्तार न दे सका । प्रेमचंद मानते हैं कि हमारे सोए हुए धर्म ज्ञान की सारी संपत्तिा लूट जाए, तब भी उसे खबर नहीं होती, परंतु ललकार को सुनकर धर्म सचेत हो जाता है। पंचायत बैठी, खाला को जब सरपंच चुनने को कहा गया तो उसने अलगू चौधरी को चुना। जुम्मन को लगा जैसे बाजी तो उसके ही पक्ष में होगी क्योंकि अलगू उसका खास मित्र है।

अलगू ने भी साफ कर दिया कि भले ही वे अच्छे मित्र हैं लेकिन इस समय उसके सामने खाला और जुम्मन बराबर हैं। दोनों के पक्षों को सुनने के बाद जो फैसल हुआ, जिससे सभी प्रसन्न हुए और अलगू की तारीफ करने लगे- ''इसका नाम पंचायत है। दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया दोस्ती, दोस्ती की जगह है, किंतु धर्म का पालन करना मुख्य है। ऐसे ही सत् वादियों के बल पर पृथ्वी ठहरी है, नहीं तो वह कब की रसातल को चली जाती।''[6]

प्रेमचंद ने अलगू के माध्यम से सत्यवादियों को सभी से श्रेष्ठ सिद्ध किया। जुम्मन को उस समय भले बुरा लगा हो परंतु बाद में वह भी न्याय को, उसके महत्व को समझ गया। इस कहानी में ''अलगू चौधरी और जुम्मन शेख ने अपने हृदय के सत्य को व्यक्तिगत बैर से ऊपर रखा ।''[7] धर्म का ही दूसरा रूप है सत्य और धर्म साकार होता है, कर्तव्य पालन में। अलगू चौधरी को उनके धर्म का बोध दायित्व की भावना ने कराया। परिणामतः न्याय की कुर्सी पर बैठकर वे मित्रता जैसी बातों से ऊपर उठकर सत्य और धर्म का ही पक्ष ले सके।

गाँधी जी का पूरा जीवन सत्य, धर्म और अहिंसा की त्रिवेणी है। साहित्यकारों ने इस त्रिवेणी से यथा आवश्यकता मुक्ता ग्रहण किए हैं। प्रेमचंद इनमें सर्वाधिक सफल गोताखोर हैं। इसलिए मैं साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद को गांधीवाद क प्रवक्ता मानने के पक्ष में रही हूँ। गांधी दर्शन का एक और महत्वपूर्ण तत्व है- निरंतर कर्मशील रहना। उनका मानना था कि निष्क्रिय होकर जीवन का नाश ही होता है। प्रेमचंद ने इस सिद्धांत को 'सुजान भगत' कहानी में अभिव्यक्त किया है। इस कहानी का मुख्य पात्र सुजान भगत जीवन के संघर्ष से त्रस्त हो वैराग्य धारण कर लेता है। उसके इस रूप को उसके पुत्र पसंद नहीं करते। एक दिन जब सुजान किसी भिक्षार्थी को भिक्षा देने जाता है तो उसका पुत्र उसके हाथ से भिक्षा का पात्र छीन लेता है, तब उसे अनुभव होता है कि वैराग्य धारण करने के साथ ही उसके सारे अधिकार भी छिन गए हैं। उसे ये अपमान असह्य हो जाता है। वह रात भर अपनी स्थिति के बारे में सोचता रहता है। उसका सोया हुआ पौरुष जाग उठता है। उसने निश्चय कर लिया है कि- ''अब तक जिस घर में राज्य किया, उस घर

में पराधीन बनकर नहीं रह सकता। उसको श्रद्धा की चाह नहीं, सेवा की भूख नहीं। उसे अधिकार चाहिए।''[8]

वैराग्य के बाद घर के कामों से वर्षों तक सुजान ने कोई वास्ता नहीं रखा, लेकिन इस घटना ने उसके अंतर्मन को आंदोलित कर दिय । उसने अपने बटों से अधिक मेहनत और खेती कर अपने खोए अधिकार को प्राप्त कर लिया। उसकी सर्वाधिक कार्य क्षमता के आगे उसके पुत्र भी शर्मिंदा हुए। अधिकार भी कर्म से ही प्राप्त होते हैं। कर्मशील रहकर ही मनुष्य दूसरों को प्रेरित करता है, श्रद्धा अर्जित करता है। रोगियों की सेवा, अपने सभी काम स्वयं करना आदि गाँधी जी की कर्म के प्रति निष्ठा के सूचक हैं।

गाँधीजी समस्त जीवों में एक परमात्मा का स्पंदन मानते थे, एक जीव और दूसरे जीव में अंतर क्यों? थोड़ा आगे बढकर कहूँ तो गाँधीजी के युग में सवर्ण और अंत्यज का भेद बहुत मुखर था । गाँधीजी इसे अन्याय मानते थे और छुआछूत के भेद को जड़ से समाप्त करना चाहते थे। एक शब्द है 'अस्पृश्य' (अ/स्पर्श/य) स्पर्श की भाववाचक संज्ञा है स्पृश्य। इसमें 'अ' उपसर्ग लगाने से अर्थ हुआ, जिसे छुआ नहीं जाना चाहिए, जो उच्चवर्ण के लोगों से अलग है। इस वर्ग के लिए गांधीजी ने 'हरिजन' शब्द का प्रयोग किया था और इनके उत्थान के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष किया था। प्रेमचंद ने अपनी अनेक कहानियों में गाँधी जी की इस भावना को अभिव्यक्ति दी है। उनकी 'ठाकुर का कुआं' कहानी इस कथन का प्रमाण है।

महात्मा गाँधी के अनुसार- अस्पृश्यता हिंदू धर्म का अंग नहीं है बल्कि उस में घुसी हुई सड़न है, वहम है, पाप है और उसको दूर करना हर एक हिंदू का धर्म है, उसका परम कर्तव्य है। गाँधी जी से प्रेरित होकर प्रेमचंद ने इसी अस्पृश्यता के विरोध में बड़ी सशक्त आवाज अपनी कहानियों में उठाई। उन्होंने कुलीनता का संबंध जन्म से न मानकर कर्म से माना और निर्भीक होकर कहा, मैं कर्मों से ही वर्ण मानता हूँ। उन्हें इस बात से बहुत कष्ट था कि ऊँच-नीच का भूत कब तक हमारे सिर पर सवार रहेगा।

इसी अस्पृश्यता को प्रेमचंद ने 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में प्रस्तुत किया है। इस कहानी की पात्र 'गंगी' सामाजिक अन्याय के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त करती है। अस्पृश्यता के विष के कारण ही उसके बीमार पति जोखू को गंदा और बदबूदार पानी पीना पड़ता है। ठाकुर का कुआं छूना उसके लिए वर्जित है। गंगी के आक्रोशपूर्ण कथन में स्वयं को सवर्ण कहने वाले उन सफेदपोशों के चरित्र की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं। वह कहती है- "हम क्यों नहीं हैं और यह लोग क्यों ऊँचे हैं। इसलिए कि यह लोग गले में तागा डाल लेते हैं। यहाँ तो जितने हैं, एक से एक छँटे हैं। चोरी ये करें, जाल फरेरे ये करें, झूठे मुकदमें ये करें। इन्हीं पंडित जी के घर में तो बारह मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। कभी गाँव आ जाती हूँ तो रस भरी आँखों से देखने लगते हैं।''[9]

प्रेमचंद मानते हैं कि वर्ण व्यवस्था की काई से भरे असंख्य मिट्टी के घडों को शिक्षा, उच्च शिक्षा ही तोड-फोड़ कर एक कर सकती है। 'गंगी' के माध्यम से प्रेमचंद जी गाँधी चिंतन के प्रति अपनी आस्था शिद्दत के साथ व्यक्त कर रहे हैं।

प्रेमचंद युग में प्रेमचंद ही ऐसे लेखक थे जिन्होंने गाँधी दर्शन को जिया और अभिव्यक्ति दी। महात्मा गाँधी की दृष्टि में सच्चा साहित्य समाजलक्षी होता है। उन्होंने कला की ही भाँति साहित्य की कसौटी भी उपयोगिता को ही माना है। वे मानते हैं कि वही काव्य और वही साहित्य चीरंजीवी रहेगा, जिसे लोग सुगमता से पा सकेंगे, जिसे वे आसानी से पचा सकेंगे। इन्हीं आदर्शों को प्रेमचंद ने अपने साहित्य में

जिया है, वे भी साहित्य को समाजलक्षी मानते हैं।

संदर्भ सूची

1. संस्मरणः महादेवी वर्मा, पुण्य स्मरण, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट दिल्ली 2002, पृ.सं. 85
2. वही : स्मरण प्रेमचंद, पृ. सं. 39
3. प्रेमचंद कलम का सिपाही : अमृत राय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962, पृ. सं. 4
4. प्रेमचंद संपूर्ण कहानियाँ-1, नमक का दारोगा , संपादक- कांति प्रसाद शर्मा, संस्कृति साहित्य, दिल्ली 2006, पृ.सं. 291
5. वही : पंच परमेश्वर, पृ. सं. 396
6. वही : पृ.सं. 399
7. हिन्दी कहानी में गाँधीवाद, प्रथम खण्ड, निशा गहलोत, राहुल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ 2005, पृ. सं. 206
8. प्रेमचंद संपूर्ण कहानियाँ-3, 'सुजान- भगत' संपादक- कांति प्रसाद शर्मा, संस्कृति साहित्य, दिल्ली 2006 पृ. सं. 390
9. वही : 'ठाकुर का कुआँ' पृ. सं. 55

हिन्दी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)